CHAPTER 38

MUSIC

Doctoral Theses

01. KATHURIA (Sumita)
Role of Children Book Design in Publishing.
Supervisors : Prof. S.N. Lahiri
Th 22986

Contents

1. Introduction 2. History of writing 3. Conceptualizing and originality 4. Book structure 5. Story telling traditions 4. Expression-illustrating the books 5. Role of books for children 6. Technology and innovation 7. E-publishing. Conclusion, Bibliography. Index.

02. कुकरेजा (दीपक कुमार)
रागों का समय सिद्धान्त : एक समीक्षात्मक अध्ययन।
निर्देशक : डॉ. अनन्य कुमार डे
Th 22987

सरांश
(सत्यापित)

राग प्रनाली भारतीय शास्त्रीय संगीत की एक अनुपम परिकल्पना है जिसका उद्‌गम प्राचीन काल में हो चुका था . .राग के विकास तथा विस्तार के साथ ही उन्हें वर्गीकृत करने के लिए विभिन्न पद्धतियों का जन्म हुआ का विभाजन भी इन्हीं पद्धतियों में से एक था समयानुसार रागों| समय सिद्धान्त राग पद्धति के अस्तित्व में आने से पूर्व ही प्रचार में आ चुका था जिसका प्रमाण हमें वैदिक कालीन ग्रंथों में मिलता है| परन्तु राग के सन्दर्भ में समय सिद्धान्त का वर्णन सर्व प्रथम नारद कृत 'संगीत मकरंद' नामक ग्रन्थ में किया गया| नारद के पश्चातवर्ती ग्रंथकारों में कालिदास, नान्यदेव, अभिनवगुप्त तथा शारंगदेव इत्यादि ग्रंथकारों का नाम आता है जिन्होंने अपने मतानुसार रागों का समय निर्धारित किया है| इसी प्रकार राग की समय तथा रितु संबंधी अवधारणा का समर्थन करने वाले मध्यकालीन विद्‌वानों में मियाँ तानसेन, दामोदर मिश्र, पंडित लोचन तथा अहोबल इत्यादि ग्रंथकार सम्मिलित थे| आधुनिक युग में इस परम्परा के प्रचारप्रसार का श्रेय पंडित भातखंडे को जाता है-| यदि प्राचीन काल से आधुनिक काल तक विद्‌वानों द्‌वारा प्रस्तुत किये गए मतों पर विचार किया जाए, तो सभी शास्त्रकारों ने इस बात का समर्थन किया है कि रागों को उनके निर्धारित समय पर गानेबजाने से ही उनकी रंजकता सिद्‌ध होती है-| यह तथ्य राग के सौन्दर्यात्मक तथा मनोवैज्ञानिक पक्ष की ओर संकेत करता है| परन्तु अधिकाँश ग्रंथकारों ने कुछ विशिष्ट परिस्थितियों में इस नियम का पालन न करने की छूट दी है| आधुनिक युग के लगभग सभी प्रतिष्ठित कलाकारों द्‌वारा इस परम्परा को स्वीकार किया गया है| अंत में यही कहा जा सकता है कि राग में रंजकता की दृष्टि से समय सिद्‌धान्त राग का एक अनिवार्य तत्व है किन्तु समय की आवश्यकता को देखते हुए इसे कठोरता से पालन करने के स्थान पर इसके नियम में थोड़ी बहुत शिथिलता आना स्वाभाविक है|

विषय सूची

1. रागों का उद्‌गम एवं विकास 2. राग वर्गीकरण पद्धतियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन 3. रागों का समय-सिद्धांत : एक ऐतिहासिक विवेचन 4. रागों के समय-सिद्धांत पर आधुनिक विचारधारा 5.समयानुसार कुछ प्रचलित रागों का सौन्दर्यात्मक विश्लेषण। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

03. गुप्ता (गरिमा)
संगीत एवं प्रकृति का अन्तर्सम्बन्ध : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन ।
निर्देशक : डॉ. सुरेन्द्र नाथ सोरेन
Th 22984

सरांश
(असत्यापित)

संगीत एवं प्रकृति का अन्तर्सम्बन्धएक विश्लेषणात्मक अध्ययनप्रकृति से हमारा तात्पर्य किसी भी प्राणी अथवा : समाज के चारों ओर विद्‌यमान समस्त परिवेश से है। आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी के साथ विभिन्न जीव-जन्तु, वनस्पतियाँ और सम्पूर्ण मानव समाज इसमें समाविष्ट हैं। प्रकृति से सम्बन्धित ऋतु प्रधान राग होते हैं। संगीत से वनस्पतियों का उत्पादन भी बढ़ता है। हिन्दुस्तानी संगीत के रागों द्‌वारा रोग निवारण तथा मानसिक रोगोपचार होते हैं। संगीत को एक उचित व्यायाम बताया है। धीरेधीरे मानव ने भावों की जगह शब्द-ोंं के आकार व अर्थ को अपना लिया। ध्वनि से स्वर व स्वर से शब्द तक जाने की यह प्रक्रिया उसके परिवर्तनशील प्रकृति का ही प्रमाण थी। प्रकृति ने हर युग, काल और परिस्थिति में संगीत को एक नई दिशा दी है।संगीत के क्षेत्र में विद्‌वानों ने मिलकर ऐसे अनेक प्रयोग किए हैं। इन प्रयोगों में एक और नवीनता और सौन्दर्य है तो दूसरी ओर चमत्कारिकता को भी प्रर्याप्त स्थान प्राप्त है जिसने सभी वर्ग के लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया है। मानव का प्रकृति के साथ सम्बन्ध शोषक एवं शोषित का न होकर पोषक एवं पोषित का होना चाहिए यही वैदिक संदेश है।सारांश में यह कह सकते हैं कि संगीत और प्रकृति का सम्बन्ध गहरा है। उसका सही मात्रा में प्रयोग करने पर हमारी अनेक समस्याएँ हल हो सकती है। यह भी कहा जा सकता है कि मानवीय जीवन में व्याप्त समस्याओं से बाहर आने के लिए संगीत का अध्ययन एवं प्रयोग करके उसको जीवनोपयोगी बनाना चाहिए। इस प्रकार प्रकृति के सभी घटक संगीत के साकारात्मक प्रभाव से अनुगृहीत हो सकते हैं।

विषय सूची

1. संगीत की परिभाषा एवं प्रकृति से तात्पर्य 2. प्राचीन काल वैदिक काल व मध्यकाल में पर्यावरण व संगीत 3. जीव-जन्तुओं, वनस्पतियों तथा प्राकृतिक तत्त्वों पर संगीत का प्रभाव 4. समय एवं ऋतु के अनुसार रागों का विभाजन 5. रागों द्वारा रोग निवारण 6. संगीत एवं प्रकृति-शिक्षा और संरक्षण। उपसंहार। कलाकारों के चित्र। संदर्भ ग्रंथ सूची।

04. GOPALAN (Shantha)
Approach to Lord Rama by Prominent Composers of Karnatic Music: An Analytical Study.
Supervisor : Prof. P.B. Kannakumar
Th 22983

Abstract
(Not Verified)

Thesis presents results of analysis of selected compositions of selected composers on their approach to Lord Rama in His various manifestations. Few mythological and historical backgrounds relating to Rama have been mentioned. Some rare ragas and compositions on Rama have been given. Compositions have been written in Roman script. Rare compositions are accompanied by notation. Thesis is in following format. PREFACE and INTRODUCTION cover nature and extent of work done. CHAPTER-! is write-up on historical background of music and its relevance to Rama. CHAPTER-2 is on Rama as described in Slokas, Ashtakams, Gadyam, and Prabhandam. CHAPTER-3 is on different aspects in selected compositions on Rama of selected Pre-Trinity composers. In compositions of Annamacharya, Purandaradasa, Bhadrachala Ramadas, Sadasiva Brahmendra, and Arunachalakavi there are unique ideas, sublime thoughts, expressions of agony, pathos, regrets, meaning of word Rama and philosophy behind chanting Rama. CHAPTER-4 is on manifestation and glory of Rama in selected compositions of selected Trinity period composers.Tyagaraja's compositions throw light on his perception of Rama, the absolute supreme power and bringforth bhakti element. Swati Tirunal's description of Rama is different from that of others. Mysore Sadasiva Rao describes Rama as saviour, protector, and giver of happiness. CHAPTER-5 is on various approaches to Rama in selected compositions of selected Post-Trinity composers. Patnam Subramanya Iyer in his compositions included concepts like total surrender, outcry for Karuna, element of questioning, despondency, and pleading. Ramnad Srinivasa Iyengar in his compositions speaks about supreme powers and kindness. CHAPTER-6 is on some rarely heard ragas and compositions on Rama. CHAPTER-7 is on references to some mythological and historical episodes on Rama. CONCLUSION, APPENDIX, and BIBLIOGRAPHY give respectively summary, compositions with notation, and references

Contents

1. Introduction 2. Historical background of music and its relevance to Lord Rama 3. Lord Rama as described in slokas ashtakams, gadyams, and prabhandam 4. Different aspects in selected compositions on Lord Rama of pre-trinity composers 5. Manifestation and glory of Lord Rama in some compositions of trinity period (between 1750 and 1850 A.D.) 6. Various approaches to Lord Rama in a few compositions of post-trinity composers (after 1850 A.D.) 7. Some rarcly heard ragas and compositions on Lord Rama 7. References to some mythological and historical episodes on Lord Rama. Conclusion. Appendix. Bibliography.

05. JAIN (Pooja)
Changing Scenario of Society under the Influence of Advertising and Marketing.
Supervisor : Prof. S.N. Lahiri
Th 22985

Contents

1. Introduction 2. History 3. Changing society through communication 4. Study of consumers in society 5. Economic development of society through advertising 6. Impact of advertising in social segment 7. Effective advertising with the advent of marketing 8. Case studies 9. Conclusion. Bibliography. Glossary.

06. भटनागर (दिशा)
ध्रुपद एवं धमार गायकी के सौन्दर्यात्मक परिप्रेक्ष्य में सांगीतिक तत्वों का निरूपण।
निर्देशिका : प्रो. सुनीता धर
Th 22982

सरांश
(असत्यापित)

ध्रुपदप्रभावित रही। धमार गायन में विभिन्न लयकारियों के द्वारा चमत्कारिकता एवं विशिष्ट सौंदर्य से मैं सदा से- इसी अभिरुचि ने मुझे ध्रुपद धमार विषय पर शोध कार्य के लिए प्रेरित किया। प्रथम अध्याय के अन्तर्गत ध्रुपद धमार की उत्पत्ति एवं ऐतिहासिक विकास क्रम को वर्णित किया गया है। भरत, भावभट्ट, पं॰ शांरगदेव,राजा मानसिंह,आ॰ बृहस्पति, श्री रातनजकर एवं अन्य विद्वानों के विचारों एवं मतों को संकलित करने के पश्चात ध्रुपद का सम्बन्ध छन्दगान, प्रबंध एवं जाति गायन के विकसित रूप में प्रतीत होता है। द्वितीय अध्याय में ध्रुपद की चार बानियाँ गोबरहार अथवा गोरहार, खंडार, डागर एवं नौहार अथवा नुहार बानियों से सम्बन्धित उपलब्ध जानकारी दी गई है। तृतीय अध्याय के अन्तर्गत सर्वप्रथम सौंदर्य की आधारभूत परिभाषा एवं विशेषताओं को बताते हुए संगीत के प्रमुख सौंदर्यात्पादक तत्वों अनुपात, संगति, एकत्व, विपर्यास, स्थायित्व, विविधता, आकार बनावट, शुद्धता, सजीवता, भाव व आनन्द एवं तत्पश्चात् संगीत में अभिव्यक्ति के तत्वों राग, नाद, श्रुति, स्वर, वर्ण, अलंकार, आलाप, गमक इत्यादि का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है। चतुर्थ अध्याय में ध्रुपदधमार की विभिन्न- प्रकार के सौंदर्य को दर्शाती हुई प्रमुख बंदिशें एवं उनका संक्षिप्त सौंदर्यात्मक विश्लेषण किया गया है। शोधविषय को विभिन्न दृष्टिकोणों से स्पष्ट करने हेतु कुछ - विद्वानों से साक्षात्कार कर एकत्र जानकारी को शोध कार्य में सम्मिलित किया है। अंत में उपसंहार मेंउत्कृष्ट के अंतर्गत इस निष्कर्ष को प्रस्तुत किया है कि ध्रुपद एवं धमार गायनकाव्य पक्ष एवं सांगीतिक शैली का सौन्दर्य उसके- पक्ष दोनों में ही समान रूप से निहित है। शोध में सहायक विविध पुस्तकों एवं अन्य साधनों का वर्णन भी संदर्भ ग्रंथ सूची के अंतर्गत किया है।

विषय सूची

1. ध्रुपद-धमार उत्पत्ति एवं विकास क्रम 2. ध्रुपद-धमार विशिष्ट घराने एवं परम्परा 3. ध्रुपद-धमार-सौन्दर्यात्मक दृष्टि से सांगीतिक तत्वों का निरूपण 4. ध्रुपद-धमार, सौन्दर्यात्मक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण कुछ रागात्मक संरचनाएँ। साक्षात्कार। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

07. मिश्रा (शिल्पा)
उत्तर भारतीय उपशास्त्रीय संगीत में बनारस घराने की कुछ प्रमुख महिला कलाकारों का सांगीतिक योगदान।
निर्देशिका : प्रो. गीता पेन्टल
Th 22988

सरांश
(असत्यापित)

प्रस्तुत शोध निबंध का विषय उत्तर भारतीय उपशास्त्रीय संगीत में"बनारस घराने की कुछ प्रमुख महिला कलाकारों का सांगीतिक योगदान है।तक अपनी कला साधना से जीवंत बनाए रखने बनारस के गौरवपूर्ण इतिहास को सदियों " में यहाँ की संगीत साधिकाओं का विशेष योगदान रहा है जिनमें गौहरजान, जद्दनबाई, सिद्वेश्वरी देवी, रसूलनबाई आदि का नाम विशेष रूप से लिया जाता है। आधुनिक काल में श्रीमती गिरिजा देवी, सविता देवी आदि बनारस घराने का शोभा बढ़ा रहीं है। अपने समय में अपने सांगीतिक जीवन में कई कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। उस समय जहाँ महिलाओं का बाहर निकलना दुलर्भ था, घुंघट प्रथा थी, गाने बजाने वाली महिलाओं को अच्छे घर की

नहीं समझा जाता था ऐसे समय में इन लब्धप्रतिष्ठित महिलाओं ने अपनी संगीत साधना नहीं छोड़ी और बनारस घराने की कीर्ति पताका को लहराया। ऐसी परिस्थितियो में इन्हें मानसिक, आर्थिक, सामाजिक आघातों को सहना पड़ा, मगर फिर भी इन्होने हार नहीं मानी और संगीत को अपना जीवन समर्पित कर पूरे देश में उभर कर सामर्ने आई। बिना इन संगीत साधिकाओं के उल्लेख किए बनारस का संगीतइतिहास अपूर्ण है-, पूर्ण नहीं माना जा सकता। प्रस्तुत शोध निबंध में बनारस और बनारस की संगीत परंपरा और संस्कृति पर संक्षिप्त विवरण किया है, बनारस में प्रचलित उपशास्त्रीय तथा लोक संगीत के कुछ प्रमुख रचनाओं की स्वरलिपियाँ भी दी गई है और बनारस की कुछ प्रमुख महिला कलाकारों का जीवन परिचय और शिक्षा संस्कार आदि पर प्रकाश डाला है। मेरी यह कामना है कि संगीत प्रेमीजन इन संगीत साधिकाओं के विषय में अनुसंधान कर बनारस की संगीत परंपरा और उत्तर भारतीय उपशास्त्रीय संगीत में बनारस घराने की कुछ प्रमुख महिला कलाकारों के सांगीतिक योगदान को समुन्नत करते हुए और अधिक लोकप्रिय करेंगे।

विषय सूची

1. बनारस घराने की उत्पत्ति 2. (क) शास्त्रीय, उपशास्त्रीय तथा लोकसंगीत का संक्षिप्त विवरण (ख) भारतीय उपशास्त्रीय संगीत में ठुमरी, दादरा का संक्षिप्त विवरण (ग) भारतीय संगीत में लोकगीतों के कुछ विशेष प्रकारों का संक्षिप्त विवरण 3. उत्तर भारतीय उपशास्त्रीय संगीत में बनारस घराने की कुछ प्रमुख महिला कलाकारों का सांगीतिक योगदान 4. बनारस घराने की उपशास्त्रीय तथा लोकसंगीत में प्रचलित कुछ प्रमुख रचनाओं की स्वरलिपियां। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

08. YADAV (Sushma)
Growth of Printmaking Centres in India: A Study of Prominent Printmakers.
Supervisor : Prof. S.N. Lahiri, Prof. Pramjeet Singh and Prof. Anupam Sud
Th 22992

Contents

1. Introduction 2. History of printmaking techniques 3. Genesis of printmaking 4. Printmaking and art education in India and printmaking setups 5. Alternative setups of printmaking 6. Contribution of pioneer printmakers in India and outside from 18th century till date 7. A New beginning of digital technology and new material 8. Printmaking as an art expression 9. Conclusion. Glossary. Bibliography.

09. रानी
हिन्दुस्तानी संगीत में पं. कुमार गंधर्व का सृजनात्मक योगदान : एक अध्ययन।
निर्देशिका : डॉ. शालिनी ठाकुर
Th 23046

सरांश
(असत्यापित)

पं कुमार गंधर्व ने लोक संगीत में राग संगीत की संभावना को खोजा तथा विविध रागों का सृजन किया जिन्हें धुनउगम राग कहा। वे हैंमालवती -, अहिमोहिनी, संजारी, मधसुरजा, लगनगंधार, सहेली तोड़ी इत्यादि। जिनमें कुछ विशेष बातें थी जैसे राग मालवती जो कि उनका प्रथम राग था जिसकी उत्पत्ति मालवा की लोक धुन से हुई अतः इसका नाम मालवा के प्रांत के नाम पर मालवती रखा। राग अहिमोहिनी की रचना नागदेवता की पूजा के समय

बजाई जा रही पुंगी की ध्वनि से हुई, राग मधसुरजा की रचना शाम के समय बलि चढ़ रहे बकरे की करुण पुकार और संध्याकालीन राग सारंग को ध्यान में रखकर हुई। इसके अतिरिक्त कुछ जोड़ रागों की भी रचना की, जैसेश्री - कल्याण, जलधर बसंती, बसंता सोनी, दुर्गा केदार इत्यादि। उन्होंने स्वनिर्मित रागों, पारंपरिक रागों तथा विविध गायन शैलियों में बंदिशों की रचना की। उनकी बंदिशों की विषयवस्तु विशेष रूप से ईश्वर स्तुति, गुरु महिमा, प्रकृति वर्णन इत्यादि संबंधित हैं। उनकी गायनशैली बहुत ही अद्भुत थी। उनकी गायकी में लोक, प्रकृति, शास्त्र, साहित्य आदि तत्व विद्यमान होते थे। उनकी गायकी में आध्यात्म की अनंत ऊचाईयाँ, चित्र का भराव, अभिनय की अभिनयात्मकता, इसके अलावा धीरज और चंचलता सभी का समावेश था। उनकी गायकी में विविध घरानों की विशेषताओं का समावेश था तथा उस पर उनकी स्वयं की सौंदर्यदृष्टि भी थी। ठुमरी, टप्पा, तराना गानें का क्रम सर्वप्रथम कुमार जी ने ही प्रारंभ किया। कुमारजी का भक्ति संगीत में योगदान अद्भुत है। कबीर के पदों को जैसी सांगीतिक अभिव्यक्ति कुमारजी ने दी उसका कोई सानी नहीं है। कुमार गंधर्व के निर्गुणी भजनों के गाने का आधार मालवा के नाथपंथी साधुओं का भजन गायन है। विषयपरक सांगीतिक कार्यक्रमों की शुरुआत भी पं कुमार गंधर्व ने ही संगीत जगत में प्रारंभ की।

विषय सूची

1. पं. कुमार गंधर्व का जीवन दर्शन 2. हिन्दुस्तानी संगीत में पं. कुमार गंधर्व का सृजनात्मक योगदान 3. पं. कुमार गंधर्व द्वारा निर्मित धुनउगम राग 4. वाग्गेयकार के रूप में पं. कुमार गंधर्व का योगदान 5. साक्षात्कार। उपसंहार। परिशिष्ट। सन्दर्भ ग्रन्थ सूची।

10. VISWANATHAN (Sushila)
Music as an Inevitable Part of Tamilian Culture.
Supervisor : Prof. P.B. Kanna Kumar
Th 22991

Abstract
(Not Verified)

This thesis is entitled “MUSIC AS AN INEVITABLE PART OF TAMILIAN CULTURE.” In Tamilian culture, music is involved in almost all activities of life from birth to death which makes them more interesting and poised. Music and songs are the spontaneous outcome of human feelings. We have a valuable wealth/treasure of music related to all occasions in various forms like devotional, folk, art music etc. A study has been made to find the different areas where music has prime place and significance and songs related to various traditional practices are given in the Appendix. Various sources like books, magazines, libraries, etc. have been used for the purpose. The thesis is chapterised as follows: Chapter I – The historical background and heritage of music in Tamilian culture and greatness of music are discussed. Chapter II – A study of various customs, cultural and religious practices of Tamilians like Poojas, Hindu Samskaras, temples, festivals, etc. where music is important has been undertaken. Chapter III – Devotional musical forms in Tamilian culture like Tiruppavai, Tiruvempavai, Tiruppugazh, Ashtapadi, Bhajana, etc. and their importance in Hindu culture are explained. Chapter IV – In this chapter, folk music of the Tamils and musical heritage of other Southern States are described. Chapter V – Brief biography of some select composers who have contributed to the enrichment of Tamilian culture are given. In Conclusion, an overview of the topics discussed in the chapters is provided. Songs collected from various sources related to customs, traditions and practices of Tamilian culture are given in the Appendix. As most songs belong to applied music genre, they can be sung to any raga of the musician’s/singer’s choice and improvised according to one’s ability. Hence, they are given only in their simple form. The list of reference materials used for this thesis is given in the Bibliography.

Contents

1. Introduction 2. History and musical heritage of Tamil Nadu and greatness of music 3. Music related to religious practices, customs and beliefs in Tamilian culture 4. Various kinds of devotional music in Tamilian culture 5. Folk music and musical heritage of other Southern states 6. Contribution of select wellknown composers to Tamilian culture. Conclusion. Appendix. Biblography.

11. SHRIVASTAVA (Satyam)
Ethics and Legal Aspects in Advertising in Context with Today's Socio and Economic Trends.
Supervisor : Prof. S.N. Lahiri
Th 22990

Contents

1. Introduction 2. Advertising perspectives 3. Economic aspects in advertisisng 4. Social impact in advertising 5. Factors effecting advertising 6. Social responsibility 7. Advertising regulation 8. Organizations 9. Case studies of Indian advertising 10. International governing body 11. Conclusion. Bibliography.

12. शर्मा (भावना)
हिमाचल प्रदेश के लोक नाट्य का सांगीतिक अध्ययन।
निर्देशिका : डॉ. सुदीप्ता शर्मा
Th 22989

विषय सूची

1. नाट्य एवं संगीत ऐतिहासिक अवलोकन (लोक नाट्य के संदर्भ में) 2. हिमाचल प्रदेश के प्रमुख लोक नाट्यों का विश्लेषण एवं उनमें प्रयुक्त सांगीतिक तत्वों का अध्ययन। 3.हिमाचल प्रदेश के जनजातीय लोक नाट्यों का सांगीतिक विश्लेषण 4. हिमाचल प्रदेश की संगीत-जीवी जातियों का लोक नाट्य में योगदान तथा इनके द्वारा बजाई जाने वाली प्रमुख तालें 5. हिमाचल प्रदेश के लोक वाद्य तथा नाट्यों में इनकी भूमिका। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

13. संतोष कुमार
ग़ज़ल गायकी की सामाजिक दशा एवं दृष्टिकोण : एक अवलोकन।
निर्देशिका : प्रो. उमा गर्ग
Th 23132

विषय सूची

1. ग़ज़ल का अर्थ एवं संरचना के तत्व व ऐतिहासिक विकास 2. ग़ज़ल गायकी और समाज 3. फ़िल्म जगत की ग़ज़ल का सामाजिक दृष्टिकोण 4. ग़ज़ल गायन पर विभिन्न कलाकारों का दृष्टिकोण 5. उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

14. सिंह (गीतांजली)
पूरब अंग की ठुमरी गायन का सांगीतिक विवेचन : बनारस के विशेष संदर्भ में।
निर्देशिका : डॉ. गीता पेन्टल
Th 22980

विषय सूची

1. ठुमरी की उत्पत्ति एवं विकास 2. ठुमरी की विभिन्न शैलियाँ 3. पूरब अंग की ठुमरी के अन्तर्गत बनारस घराने का इतिहास 4. बनारस घराने की ठुमरी के तत्त्व एवं उनका सांगीतिक विवेचन 5. बनारस घराने के विभिन्न कलाकारों की जीवनियाँ। उपसंहार। परिशिष्ट। संदर्भ ग्रंथ सूची।

15. सिंह (जसबीर)
आधुनिक युग में निर्मित प्रमुख प्रयोगात्मक स्वर वाद्यः उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत के विशेष संदर्भ में।
निर्देशिका : प्रो. सुनीरा कासलीवाल व्यास
Th 22981

विषय सूची

1. भारत में वाद्य परम्परा और उसका विकास 2. प्रयोगात्मक वाद्य बनाने वाले कलाकार और उनके द्वारा निर्मित प्रयोगात्मक वाद्य 3. प्रयोगात्मक वाद्य बनाने वाले वाद्य निर्माता एवं उनके द्वारा निर्मित प्रयोगात्मक वाद्य 4. प्रयोगात्मक वाद्य के संबंध में विभिन्न विद्वानों के विचार। चित्र-वीथि। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

16. SOMIA
Analytical Study of Nandanar Charithram and its Influence on Tamil Culture with Special Reference to Socio-Musical Scenario.
Supervisor : Prof. T.V. Manikandan
Th 23095

Contents

1. Historical background of Tamil civilization 2. The legend Nandanar Charithram and its age 3. Gopalakrishna Bhrarati – An epoch maker 4. A Musical analysis of Nandanar Charithram 5. Other works of Gopalakrishna Bharathi 6. Gopalakrishna Bharati as a role model 7. Gopalakrishna Bharati's Nandanar Charithram as a trend setter 8. Conclusion. Appendix. Bibliography.

M.Phil Dissertations

01. IAWIM (Banrimika Dellis)
Study on the Promotion and Development of Music in Meghalaya.
Supervisor : Prof. Ojesh Pratap Singh

02. UDITI SRI KRISHNA
Epic Anecdotes of Vishnu in the Kritis of Swati Tirunal.
Supervisor : Dr. Deepti Omchery Bhalla

03. उनियाल (दिनेश)
उत्तराखण्ड में गढ़वाली लोक संगीत : विवेचनात्मक अध्ययन।
निर्देशक : डॉ. जगबन्धु प्रसाद

04. कविता
तोड़ी थाट के प्रचलित रागों का अध्ययन सितार वादन की गतों के संदर्भ में।
निर्देशक : प्रो. राजीव वर्मा

05. खान (सुहेल सईद)
दिल्ली घराने के वाद्य कलाकार : तंत्री वाद्य के विशेष संदर्भ में।
निर्देशक : प्रो. अल्का नागपाल

06. KANNAN (Tara)
Influence of Hindustani Music on the Natya Sangeet of Maharashtra: An Analytical Study.
Supervisor : Dr. Jagbandhu Prasad

07. गीतांजलि
ग्वालियर घराने के प्रचार व प्रसार में सिंधिया वंश का योगदान।
निर्देशक : डॉ. सुरेन्द्रनाथ सोरेन

08. दिशा (मा अमृत)
पं. बलराम पाठक का सितार के क्षेत्र में योगदान।
निर्देशक : प्रो. सुनीरा कासलीवाल व्यास

09. धिंगरा (अंकिता)
भारतरत्न पं. रविशंकर जी का सितार के क्षेत्र में योगदान।
निर्देशक : प्रो. प्रतीक चौधुरी

10. निशा
भैरव अंग के रागों का विवेचनात्मक अध्ययन।
निर्देशक : डॉ. राजपाल सिंह

11. प्रशांत रत्न
मिथिला के संगीत में कवि कोकिल विद्यापति का योगदान।
निर्देशिका : डॉ. अनन्य कुमार डे

12. भारद्वाज (वीर भद्र)
सरोद वादक उस्ताद अली अकबर खाँ का व्यक्तित्व एवं कृतित्व।
निर्देशक : प्रो. सुनीरा कासलीवाल व्यास

13. BHAT (Waseem Ahmad)
Relevance of Musical Instruments in Bhand Pather of Kashmir
Supervisor : Dr. Shalini Thakur

14. BHATTI (Harsimran Kaur)
Contribution of Some Modern Trend Setters (Singers) in Popularising Punjabi Folk Music.
Supervisor : Dr. Sudeepta Sharma

15. भाटिया (ओशीन)
बिहाग अंग के कुछ राग : एक अध्ययन।
निर्देशक : प्रो. ओजेश प्रताप सिंह

16. MASHARING (Darilin Jovita)
Study on the Folk Songs of Ri-Bhoi Region.
Supervisor : Prof. Ojesh Pratap Singh

17. MOGHAL (Dar Humaera)
Evolution and Development of Stringed Instruments with Special Reference to Jammu and Kashmir.
Supervisor : Prof. Anupam Mahajan

18. रावत (बबीता)
कुमाऊँ की होली गायन परम्परा : एक अध्ययन।
निर्देशिका : प्रो. उमा गर्ग

19. रुहेला (रचना)
मुरादाबादी शैली की रामलीला में सांगीतिक तत्व।
निर्देशक : डॉ. हरीश तिवारी

20. VIJAYALAKSHMI (K.)
Contribution of a Composer from Andhra Pradesh Sri Ogirala Veeraraghava Sarma to Karnatic Music.
Supervisor : Prof. P. B. Kanna Kumar

21. श्यामा कुमारी
शास्त्रीय संगीत में ताल के दस प्राण का महत्त्व।
निर्देशक : डॉ. हरिकिशन गोस्वामी

22. SHARMA (Kongbrailatpam Tamashwor)
Musical Content in Raga-Ragini Paintings.
Supervisor : Ananya Kumar Dey

23. शर्मा (भरत)
तुलसीदास कृत रामचरितमानस के प्रस्तुतिकरण का सांगीतिक विश्लेषण : आधुनिक परिप्रेक्ष्य में।
निर्देशक : डॉ. सुरेन्द्र नाथ सोरेन

24. शर्मा (ऋचा)
राग प्रस्तुतिकरण में रस का महत्त्व।
निर्देशिका : डॉ. शालिनी ठाकुर

25. सहजवानी (सृष्टि)
शास्त्रीय संगीत में टप्पा गायन शैली का संक्षिप्त अवलोकन।
निर्देशक : डॉ. राजपाल सिंह

26. सरकार (उदिति)
बंगाल का लोक संगीत : भटियाली के विशेष संदर्भ में।
निर्देशक : प्रो. शैलेन्द्र कुमार गोस्वामी